IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजनीतिक जनमत निर्माण में सोशल मीडिया का योगदान अवसर और चुनौतियाँ

शोधार्थी : कपिल पचौरी

सह प्राध्यापक : डॉ रवि रंजन

प्रस्तावना

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में राजनीतिक जनमत निर्माण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो चुनावों, नीतियों और सामाजिक मुद्दों पर जनता की राय को प्रभावित करती है। सोशल मीडिया, जो 21वीं सदी की सबसे बड़ी डिजिटल क्रांति में से एक है, इस प्रक्रिया में एक अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्म न केवल संवाद के माध्यम बने हैं, बल्कि राजनीतिक विचारधाराओं को प्रसारित और संगठित करने में भी मददगार हैं।

राजनीतिक जनमत निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका

सोशल मीडिया ने पारंपरिक मीडिया को चुनौती देते हुए राजनीतिक संवाद को एक नया आयाम दिया है। यह प्लेटफार्म एक ऐसी जगह बन गए हैं जहां राजनीतिक दल, उम्मीदवार और सरकारें सीधे जनता से संवाद कर सकते हैं। भारत में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सोशल मीडिया पर सक्रिय रहना और इसे संवाद का मुख्य माध्यम बनाना इसका एक प्रमुख उदाहरण है। उनके ष्मन की बात कार्यक्रम और चुनाव अभियानों में सोशल मीडिया का उपयोग इस बात को दर्शाता है कि कैसे यह माध्यम राजनीतिक संदेश को तेजी से फैलाने में सहायक है।

अवसर सोशल मीडिया की सकारात्मक भूमिका

1. जनसंचार में सुगमता सोशल मीडिया ने जानकारी और विचारों को साझा करना पहले से कहीं अधिक आसान बना दिया है। भारत जैसे देश में, जहां 2024 तक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 90 करोड़ से अधिक हो चुकी है, सोशल मीडिया राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

2. जनता की भागीदारी में वृद्धिरू सोशल मीडिया ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया में जनता की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया है। जैसे, ट्विटर हैशटैग अभियानों (रुडमज्वव, रुथ्तउमतेच्तवजमेज) ने सरकार और राजनीतिक दलों को मुद्दों पर कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया।

3. युवा मतदाताओं का जुड़ाव भारत की लगभग 65: आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है। यह वर्ग सोशल मीडिया पर अत्यधिक सक्रिय है और राजनीतिक दलों के लिए एक महत्वपूर्ण लक्षित समूह है। ष्युवाओं को जोड़नेष के लिए विभिन्न अभियानों और डिजिटल सामग्री का निर्माण इसी का उदाहरण है।

4. स्मार्ट डेटा एनालिटिक्स सोशल मीडिया पर उपलब्ध डेटा का उपयोग करके राजनीतिक दल मतदाताओं की प्राथमिकताओं, इच्छाओं और समस्याओं का विश्लेषण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, 2014 और 2019 के भारतीय आम चुनावों में, भारतीय जनता पार्टी ने डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से अपने अभियान को धार दी।

5. प्रचार और सूचना का त्वरित प्रसार सोशल मीडिया ने लाइव स्ट्रीमिंग, वीडियो और ग्राफिक्स के जरिए राजनीतिक संदेशों को देश के कोने-कोने तक पहुंचाना संभव बनाया है।

चुनौतियाँ सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

1. फेक न्यूज़ और दुष्प्रचाररू भारत में फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। व्हाट्सएप पर वायरल संदेशों और फेक वीडियो ने हिंसा और अफवाहों को बढ़ावा दिया है। उदाहरण के लिए, 2018 में मोब लिंचिंग की घटनाएं फेक न्यूज़ के प्रसार का परिणाम थीं।

2. ट्रोलिंग और हेट स्पीच सोशल मीडिया पर राजनीतिक ट्रोलिंग और हेट स्पीच एक गंभीर समस्या बन गई है। इससे न केवल राजनीतिक संवाद का स्तर गिरता है, बल्कि समाज में ध्रुवीकरण भी बढ़ता है।

3. निजता और डेटा सुरक्षा सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ताओं के डेटा का दुरुपयोग एक बड़ी चुनौती है। भारत में ष्कैम्ब्रिज एनालिटिकाष विवाद ने इस विषय पर गहन चर्चा को जन्म दिया।

4. अत्यधिक राजनीतिक सोशल मीडिया पर राजनीतिक एजेंडों के तहत सामग्री का प्रसार समाज में ध्रुवीकरण को बढ़ावा देता है। भारत में सांप्रदायिक तनाव और चुनावी के लिए सोशल मीडिया के दुरुपयोग के कई उदाहरण देखे गए हैं।

5. फेक बkट्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सोशल मीडिया पर बkट्स और अkटोमेटेड अकाउंट्स का उपयोग राजनीतिक जनमत को प्रभावित करने के लिए किया जाता है। यह प्रक्रिया जनता को भ्रमित करती है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल उठाती है।

भारत में सोशल मीडिया का राजनीतिक उपयोग

भारत में राजनीतिक दल और उनके नेता सोशल मीडिया को जनमत निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहे हैं। भारतीय जनता पाटऍ, कांग्रेस, आम आदमी पाटऍ और अन्य क्षेत्रीय दल अपने अभियानों को बढ़ावा देने के लिए फेसबुक और ट्विटर का व्यापक उपयोग करते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सोशल मीडिया पर प्रभावरू 2024 में मोदी दुनिया के सबसे ज्यादा फkलो किए जाने वाले नेताओं में शामिल हैं। उनके ट्विटर हैंडल और फेसबुक पेज पर बड़ी संख्या में फालोअर्स हैं, जो उनके राजनीतिक एजेंडा को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने में सहायक हैं।

चुनावी अभियान और डिजिटल युद्धरू 2019 के आम चुनावों में, राजनीतिक दलों ने फेसबुक और गूगल पर विज्ञापनों पर करोड़ों रुपये खर्च किए।

समाधान और भविष्य की रणनीति

1. फेक न्यूज़ को नियंत्रित करनारू फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार को रोकने के लिए कड़े कानून और तकनीकी उपाय अपनाए जाने चाहिए। भारत में आईटी अधिनियम और फैक्ट-चेकिंग प्लेटफ़kर्म इस दिशा में मददगार हो सकते हैं।

2. निजता की सुरक्षारू उपयोगकर्ताओं के डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डेटा सुरक्षा कानून लागू करना आवश्यक है। भारत का प्रस्तावित डेटा संरक्षण कानून इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

3. डिजिटल साक्षरता जनता को सोशल मीडिया का सही उपयोग सिखाने और फेक न्यूज़ से बचाने के लिए डिजिटल साक्षरता अभियान चलाए जाने चाहिए।

4. संतुलित संवाद को बढ़ावा राजनीतिक संवाद को बचाने और स्वस्थ बहस को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफ़kर्म को अधिक उत्तरदायित्व से कार्य करना चाहिए।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने राजनीतिक जनमत निर्माण में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियां भी सामने आई हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहां लोकतंत्र की जड़ें गहरी हैं, सोशल मीडिया का सही उपयोग जनता की आवाज को प्रभावी बनाने में मदद कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि सरकार, प्लेटफ़kर्म और जनता तीनों मिलकर इसके उपयोग को अधिक जिम्मेदारी और पारदर्शिता के साथ सुनिश्चित करें।

इस प्रकार, सोशल मीडिया भारतीय लोकतंत्र का एक शक्तिशाली उपकरण है, जो अगर सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो राजनीतिक जनमत निर्माण को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है।

यहाँ 10 भारतीय किताबों की सूची दी गई है जो राजनीतिक जनमत निर्माण, सोशल मीडिया, और भारतीय लोकतंत्र जैसे विषयों से संबंधित हैं। ये किताबें आपके संदर्भ और विस्तृत अध्ययन के लिए उपयोगी हो सकती हैं

1- "The Real Face of Facebook in India"

लेखकरू पारनजkय गुहा ठाकुरता और साथी लेखक विषय यह किताब फेसबुक और उसके भारत में राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव पर केंद्रित है, विशेष रूप से चुनावों में उसकी भूमिका।

2. India Connected: How the Smartphone is Transforming the World's Largest Democracy"

लेखकरू रवि अग्रवाल

विषय किताब भारत में स्मार्टफोन और सोशल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करती है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रही है।

3. "Democracy's XI: The Great Indian Cricket Story"

लेखक राजदीप सरदेसाई

विषय इस किताब में खेल, राजनीति और समाज के बीच के संबंध को समझाया गया है

4- "The Verdict: Decoding India*s Elections"

लेखकरू प्रणय rkय और डॉ. डोरोथी स्वैन

विषय यह किताब भारतीय चुनाव प्रक्रिया, जनमत निर्माण और सोशल मीडिया की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण करती है।

5. "The Great Indian Phone Book"

लेखक रोबर्ट जेन्सेन और असिमित्री बैनजऍ

विषय यह किताब भारतीय मोबाइल क्रांति और उसके राजनीतिक, सामाजिक और सास्कृतिक प्रभावों पर केंद्रित है।

6. "Social Media in South India"

लेखक श्रुति शेट्टी और अन्य

विषय यह किताब दक्षिण भारत में सोशल मीडिया के उपयोग और इसके राजनीतिक प्रभाव का विश्लेषण करती है।

7. "Cybersecurity and Cyberwar: What Everyone Needs to Know

लेखक पीटर डब्ल्यू. सिंगर और एलन फ्राइडमैन

विषय सोशल मीडिया और साइबर सुरक्षा के संदर्भ में फेक न्यूज़ और डेटा सुरक्षा पर चर्चा।

8. "India After Gandhi"

लेखक रामचंद्र गुहा

विषय यह किताब भारतीय लोकतंत्र के विकास और राजनीतिक प्रक्रिया में आधुनिक तकनीकों के योगदान पर चर्चा करती है।

9. "The New Digital Age: Transforming Nations] Businesses] and Our Lives"

लेखक एरिक श्मिट और जारेड कोहेन

विषय डिजिटल युग में राष्ट्रों और राजनीति के बदलाव पर केंद्रित है।

10- "Whose Media\ A Woman's Space: The Role of Media in Society"

लेखकरू कस्तूरी सेन

विषय यह किताब मीडिया, जिसमें सोशल मीडिया भी शामिल है, के समाज और राजनीति पर प्रभाव का अध्ययन करती है

इन किताबों को आप अपनी शोध सामग्री के लिए आधार बना सकते हैं।